Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सूर्यवाला के संवेदनात्मक दंश – 'यामिनी कथा'

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम*

* सहा. प्रा. (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महा., इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सरांश– कथा में ऐसा कुछ भी नहीं है कि यामिनी के दोनों पति उसे किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट देते हो, मारते–पीटते हो, या कुछ अपशब्द कहते हो। यामिनी के पति विश्वास और बाद में निखिल दोनों ने ही उसे वो सब दुनियाभर की वस्तुएँ लाकर दी है। जो एक पढ़ा–लिखा पैसे वाले पति लाकर देता हैं। यामिनी के साथ नौकरी के बाद जितना समय मिलता है, उन दोनों ने व्यतीत भी किया है। पर जब हम इस कथा का पठन करते हैं तो यह कथा अत्यंत ही भावपूर्ण नजर आती है।

शब्द कुन्जी–जिम्मेदारी, बयानबाजी, भावपूर्ण।

प्रस्तावना – दामपत्य जीवन का अनंत आकाश इस कहानी में उकेरा गया है। परन्तु यामिनी के लिए वह मरुस्थल से बढ़कर नहीं है, क्योंकि सुसिक्षित व्यक्तियों की बयानबाजी अनपढ़ व्यक्तियों से अधिक घायल करती है। एक छोटा सा कथन मैं आपको इस कथा को बताना चाहूंगी, कि मुँह से निकला शब्द और वाण से निकला तीर कभी वापस नहीं होते। 'अगर प्यार भी नहीं दिया मैंने तुम्हें तो क्या देता रहा हूँ अभी तक?

बेशक इसका सीधा प्रमाण तो चुनमुन ही है न, निखिल। पुरुष के लिए तो शरीर से अलग भी प्यार के अन्वेषण की शर्तें.....।

तो ठीक है सिर्फ एक दिन मुझे शरीर के बिना प्यार करके दिखाना यामिनी।'

बस कुछ ऐसे ही छोटे छोटे संवाद हैं जो हमें पुरुष की भावनाओं से बार–बार परिचित कराते रहते हैं। कथा बहुत कम पात्रों को लेकर चली है। कुल छ: पात्र है, पर कथा सिर्फ चार पत्रों से आगे बढ़ी है। कथा में कही कोई हॉथ–पॉच नही है। सभी के कथन सभी का व्यक्तित्व अलग–अलग दिखाई पड़ता है।

इस कथा में यामिनी की आत्मनिर्भरता की कमी स्पष्ट दिखाई दी है, जिसके चलते भी वह त्रस्त है, इसलिए महिलाओं का आत्मनिर्भर होना भी परम आवश्यक माना जाना चाहिए। यदि वह आत्मनिर्भर होती तो शायद दूसरा विवाह नहीं करती और वही स्थितियाँ उत्पन्न नहीं होती जो पूर्व में थी। पर यह कथा बहुत सच्ची प्रतीत होती है। यामिनी कहती है– 'मेरे लिए प्रौढ़ा माँ के तुरंत बाद नवेली पत्नी की भूमिका यह सब स्वाभाविक कहां हो पाता है? थकान से त्रस्त होने लगती हूँ। एक के पास होती और दूसरे का खटका' यामिनी कथा सूर्यबाला जी द्वारा रचित ऐसी कृति है, जो स्त्री जीवन को समझने में पूर्णत: सशक्त है। इस कथा में किसी दलित, पिछड़े और आदिवासी स्त्री के जीवन का चित्रण नहीं किया गया है, अपितु इस कथा की स्त्री सुशिक्षित, समझदार और व्यवहारिक है, चूँकि वह पढ़ी–लिखी है इसलिए अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूर्ण तत्परता से करती है। फिर भी यामिनी के मन में असंतोष क्यों है? उसका मन अर्न्तद्वन्द से भरा क्यों है? सभी को यथायोग्य प्रेम और समर्पण देने के पश्चात् भी वह असमंजस में क्यों है? कथा के प्रारंभ से अंत तक उसके जीवन की दर्दनाक कराह हम पाठकों को भी उद्वेलित क्यों कर रही है।

कथा में ऐसा कुछ भी नहीं है कि यामिनी के दोनों पति उसे किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट देते हो, मारते–पीटते हो, या कुछ अपशब्द कहते हो। यामिनी के पति विश्वास और बाद में निखिल दोनों ने ही उसे वो सब दुनियाभर की वस्तुएँ लाकर दी है। जो एक पढ़ा–लिखा पैसे वाले पति लाकर देता हैं। यामिनी के साथ नौकरी के बाद जितना समय मिलता है, उन दोनों ने व्यतीत भी किया है। पर जब हम इस कथा का पठन करते हैं तो यह कथा अत्यंत ही भावपूर्ण नजर आती है। कथा का प्रवाह सतत है प्रवाह सतत होने के उपरांत भी पाठक थोड़ा कथनों पर रुकता है क्योंकि वह कथन अत्यंत गहरी हैं, यह कथन हम स्त्रियों के जीवन में रोजमर्रा के कथन है, इसलिए हम इस कथा को पढ़ते–पढ़ते दो–चार भावना के आँसू जरूर बहते हैं, कि क्या सब कुछ कहने का अधिकार पुरुषों को ही है, महिलाएं क्या सिर्फ महान बनने के लिए ही इस धरा पर अवतरित हुई है।

कहानी में स्त्री पात्र (यामिनी) को लेकर कई ऐसे भावनात्मक मोड़ आते हैं जो सामान्य रूप से स्त्रियों की जिंदगी को देखे जा सकते हैं। रिश्तो के लिए, रिश्ते बचे रहे इसलिए स्त्रियों को बहुत त्याग करना पड़ता है। यह सब करते हुए चाहे स्त्री की मनोदशा कुछ भी हो पर वह अपनी मनोदशा जिम्मेदारियों की व्यवस्था में बता ही नहीं पाती हर स्थिति में पिसना ही उसके जीवन की सहजता हो जाती है। उपन्यास में लेखिका ने यामिनी के माध्यम से बहुत सारे स्त्री जीवन को व्याकुल कर देने वाले क्षण समाहित किए हैं वह क्षण ऐसे प्रतीत होते हैं कि हमारे इर्द–गिर्द जैसे उन्हीं का फेरा है। बहुत सच्चे और स्वाभाविक कथनों से भरी पूरी है यामिनी कथा। बहुत अच्छे शब्दों का उपयोग करके निखिल ने बहुत साधे सधे हुए लहजे में यामिनी को सब समझा दिया– पत्नी के रूप में किसी स्त्री को स्वीकारना और बेटे के रूप में किसी लड़के को, दोनों दो अलग–अलग बातें हैं। पत्नी की जगह दूसरी स्त्री ले सकती है। बेटा तो सिर्फ अपना ही होता है।

उपन्यास में यामिनी की व्याकुलता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उसकी खामोशी एक भंवर की तरह प्रतीत होती है जिसमें वह धाँसती चली जा रही है। यामिनी अपने मानसिक भंवर की अतल गहराइयों में गंभीरता संवेदना और जटिल तनाव में अकेली ही खड़ी दिखाई देती है। यामिनी के दुख के दंश के अनेक केन्द्र है किसी तरह जीवन के संतुलित- असंतुलित प्रयास उससे सफलता -असफलता का निर्धारण यह सब कथा निविष्ट है। यामिनी का आंतरिक और बाह्य संघर्ष दोनों ही हृदय विदारक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यामिनी कथा - सूर्यवाला
2. सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध - डॉ. बसंत कुमार माली
3. कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत - डॉ. भगवान दास
4. हिन्दी कहानी एक नई दृष्टि - डॉ. इन्द्रनाथ मदान

****